हिन्दी और आओ की समकालीन काव्य संवेदना

(अनामिका और तेमसुला आओ की कविताओं के विशेष संदर्भ में)

महात्मा गाँधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा के
एम. फिल. हिन्दी तुलनात्मक साहित्य उपाधि हेतु प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध

सत्र
2014-2015

शोधार्थी
नीरू कुमारी सिंह
पंजी. सं. 2014/02/205/030

ज्ञान शांति मैत्री

क्षेत्रीय केन्द्र, कोलकाता

महात्मा गाँधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय

क्षेत्रीय केन्द्र, ऐकतान, आईए-290, सेक्टर-3,
साल्टलेक, कोलकाता-97, भारत

घोषणा-पत्र

मैं नीरू कुमारी सिंह घोषणा करती हूँ कि मेरे लघु शोध का विषय 'हिन्दी और आओ की समकालीन काव्य संवेदना' (अनामिका और तेमसुला आओ की कविताओं के विशेष संदर्भ में) है। यह लघु शोध मेरे द्वारा संग्रहित तथ्यों पर आधारित है तथा यह मेरा मौलिक कार्य है। यह शोध कार्य मैंने डॉ. कृपाशंकर चौबे, एसोसिएट प्रोफेसर/ प्रभारी, कोलकाता केन्द्र के निर्देशन व मार्गदर्शन में पूरा किया है। मैं घोषणा करती हूँ कि इस लघु शोध प्रबंध को पूरा करने में मैंने विश्वविद्यालय के शोध संबंधित नियमों का पालन किया है।

स्थान : **कोलकाता**
दिनांक : 16.11.2015

नीरू कुमारी सिंह
एम. फिल. तुलनात्मक साहित्य
पंजी.सं.-2014/02/205/030

आभार

एक निश्चित अवधि में प्रस्तुत शोध कार्य को पूर्ण करना मेरे लिए कदाचित संभव न होता यदि प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कुछ लोगों का सहयोग न मिला होता। इनके प्रति शब्दों में आभार व्यक्त करना तो संभव नहीं, फिर भी...

सबसे पहले मैं महात्मा गाँधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, कोलकाता के प्रति अपना आभार व्यक्त करना चाहती हूँ जिसने मुझे शोध कार्य का सुअवसर और एक सुव्यस्थित शैक्षणिक परिवेश प्रदान किया जिससे मेरा शोध कार्य सम्पन्न हो पाया।

मैं, अपने शोध निर्देशक डॉ. कृपाशंकर चौबे, एसोसिएट प्रोफेसर/ प्रभारी के प्रति हृदय से कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ, जिन्होंने न केवल विषय चयन एवं शोध प्रबंध लेखन के दौरान पग- पग पर मुझे स्नेहपूर्ण मार्गदर्शन एवं आशीर्वाद प्रदान किया, बल्कि इस कार्य को पूर्ण करने में वांछित स्वतंत्रता भी प्रदान की, जिससे यह शोध कार्य पूर्णता को प्राप्त कर पाया।

मैं, प्रोफेसर चन्द्रकला पाण्डेय के प्रति हृदय से कृतज्ञ हूँ, जिन्होंने शोध- कार्य के दौरान मेरा उत्साहवर्धन कर प्रकारांतर से मुझे संबल प्रदान किया।

साथ ही असिस्टेंट प्रो. अमित राय के प्रति भी मैं आभारी हूँ, जिन्होंने समय-समय पर शोध-कार्य के दौरान मेरा यथोचित उत्साहवर्धन किया।

मैं अपने मित्रों एवं सहपाठियों के प्रति आभार व्यक्त करना चाहती हूँ जिनके सहयोग ने शोध कार्य को पूर्णता प्रदान करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

स्थान : **कोलकाता** **नीरू कुमारी सिंह**

दिनांक : 16.11.2015

विषयानुक्रमणिका

भूमिका

प्रथम अध्याय : 1–23

अनामिका और तेमसुला आओ का साहित्यिक और सांस्कृतिक परिचय

द्वितीय अध्याय : 24–55

हिन्दी की समकालीन काव्य संवेदना और अनामिका

तृतीय अध्याय : 56–96

आओ की समकालीन काव्य संवेदना और तेमसुला आओ

चतुर्थ अध्याय : 97–150

अनामिका और तेमसुला आओ की कविताओं का तुलनात्मक अंतर्वस्तु विश्लेषण

4.1 अनामिका की कविताओं में स्त्री

4.2 तेमसुला की कविताओं में स्त्री

4.3 अनामिका की कविताओं में प्रकृति

4.4 तेमसुला की कविताओं में प्रकृति

4.5 अनामिका की कविताओं में समाज

4.6 तेमसुला की कविताओं में समाज

4.7 अनामिका की कविताओं में जीवन-दर्शन

4.8 तेमसुला की कविताओं में जीवन-दर्शन

4.9 अनामिका की कविताओं में विविधता

4.10 तेमसुला की कविताओं में विविधता

उपसंहार 151–152

सहायक ग्रंथ सूची 153–155

भूमिका

भारत को विभिन्नताओं का देश कहा जाता है। अकेले भारत में अनेक भाषायें हैं जिनमें हिन्दी राजभाषा है। यहाँ अनेक हिन्दी भाषी लोग हैं मगर जहाँ तक कह सकते हैं हिन्दी भाषी लोगों का देशी भाषाओं के प्रति ज्यादा लगाव न होकर विदेशी भाषाओं को जानने, सीखने के प्रति ज्यादा लगाव पाया जाता है। लोग आज हिन्दी से ज्यादा विदेशी भाषाओं को बोलने-सीखने में अपनी प्रतिष्ठा समझते हैं, अंग्रेजी बोलना गर्व की बात समझते हैं। मगर वे यह नहीं जानते कि ऐसा करते हुए वे अपनी ही परिवार या यूँ कहें अपने ही देश की भाषा से दूर होते जा रहे हैं। हमारे अपने ही देश में अनेक भाषाएं ऐसी है जिन्हें लोगों में जानने की इच्छा कम पायी जाती है। जैसे पूर्वोत्तर की तरफ लोगों का ध्यान कम जाता है तथा ये अब तक अनदेखी होती रही है। ये एक ही देश की भाषा होते हुए भी वे एक-दूसरे से अजनबी हैं जहाँ परिचय के दायरे ऐसे हैं कि कभी-कभी संकेतों में ही बात किये जाते हैं। पूर्वोत्तर की मानसिकता को समझने के लिए वहाँ के साहित्य की समझ आवश्यक है।

पूर्वोत्तर भारत बहुभाषिकता एवं बहुसांस्कृतिकता का उत्कृष्ट उदाहरण है, जिसमें भिन्न-भिन्न समुदाय वैशिष्ट्य के साथ निवास करते हैं। वस्तुतः पूर्वोत्तर एक समाज नहीं, विभिन्न समाजों का एक समूह है। वे सभी समाज अपने-आप में विशिष्ट और अलग हैं। सभी के अपने अलग सांस्कृतिक एवं सामाजिक मूल्य है। विभिन्न प्रजातियों और उनकी भाषाओं एवं बोलियों की भिन्नता के कारण परंपराएँ, रीति-रिवाज, खान-पान तो अलग हैं ही, लोक-विश्वास एवं सामाजिक मान्यताएँ भी अलग हैं, और भौगोलिक अंतराल के कारण वे आपस में बहुत कुछ अपरिचित भी होते हैं। यह अलगाव पूर्वोत्तर में अलग-अलग समाजों की रचना करता है। किसी हद तक अंग्रेजी एवं अंग्रेज़ियत ने खानपान, वेशभूषा आदि के माध्यम से इन्हें एक करने की कोशिश की है, लेकिन वह भी केवल बाहरी स्तर पर ही।

इनके दरम्यान भाषिक एवं सांस्कृतिक भिन्नता इतनी अधिक है कि विचार एवं चिंतन के स्तर पर ये अपने-आपको किसी एक सामाजिक मूल्य पर स्थिर नहीं कर पाते।

यह बात हैरान करने वाली लगती है कि पूर्वोत्तर की पीड़ा का कोई संदर्भ हिन्दी साहित्य की चिंता का विषय नहीं बनता। हिन्दी साहित्य में विश्व की भिन्न-भिन्न राजनैतिक, सामाजिक समस्याओं की अभिव्यक्ति तो देखी जा सकती है, लेकिन पूर्वोत्तर लगभग अनुपस्थित है पूर्वोत्तर की समस्याओं एवं संघर्षों में शामिल होने की इच्छा भी मुख्यधारा में नहीं दिखती। कहा जा सकता है कि हिन्दी के लिए पूर्वोत्तर अपरिचित क्षेत्र ही है। पूर्वोत्तर को हम अपना कहते हैं और अपना मानना चाहते हैं फिर भी पूर्वोत्तर के प्रति उपेक्षा का भाव जो लंबे काल से तथाकथित सभ्य 'मुख्य धारा' के लोगों का था, वह किसी न किसी रूप में आज भी चला आ रहा है।

दूरियों को कम करने के लिए तथा इनमें नजदीकियाँ लाने के लिए तुलनात्मक साहित्य ही एक ऐसा माध्यम है जो इन दूरियों को काटने का कार्य करता है। यह पहाड़ों के बीच सुरंगें बना कर एक दूसरे को नजदीक पहुँचाने की संभावना को मजबूत बनाता है। हिन्दी और आओ बहुत करीब की भाषाएं है। हिन्दी का साहित्य बहुत पुराना है और आओ एक नवीन भाषा है।

आज भी पूर्वोत्तर की बहुत सी ऐसी जगहें है जहां हम नहीं पहुँच सके हैं, जिन्हें हम अपनी लेखनी में जगह नहीं दे सके हैं। मैं अपने इस शोध में उन क्षेत्रों को लेना चाहूँगी जिसे पूरे भारत में महत्वपूर्ण स्थान नहीं दिया गया है। इन दोनों भाषाओं के बीच सहकारी संबंध स्थापित करने के उद्देश्य से ही यह लघु शोध किया गया है।

इस लघु शोध प्रबंध का शीर्षक है- 'हिन्दी और आओ की समकालीन काव्य संवेदना' (अनामिका और तेमसुला आओ के संदर्भ में)। इन दोनों भाषाओं का परिवेश अलग-अलग है। ये दोनों अलग-अलग परिवार की हैं। हिन्दी हमारे देश की राष्ट्रभाषा, सम्पर्क भाषा है तथा आओ नागा जाति की भाषा है, जो नागालैंड में बोली जाती है।

अनामिका और तेमसुला आओ दोनों अलग-अलग परिवेश की कवयित्रियाँ है, इनका परिवेश अलग होने के कारण भी इन दोनों की कविताओं में साम्य दिखायी पड़ता है।

जिस प्रकार किसी भी व्यक्ति में कुछ अच्छे गुण पाये जाते हैं कुछ बुरे। उसी प्रकार इनकी कविताओं में भी कुछ साम्य और कुछ वैषम्य के दर्शन भी होते हैं। इस शोध पत्र में इनकी कविताओं के साम्य, वैषम्य को जानने में मदद मिल सकती है।

पहला अध्याय है, अनामिका और तेमसुला आओ का सांस्कृतिक और साहित्यिक परिचय।

दूसरा अध्याय है, हिन्दी की समकालीन काव्य संवेदना और अनामिका। इसमें दिखाया है कि किस प्रकार वह आज इस समकालीन समाज को देखती है तथा साथ ही उनकी कविताओं की भी व्याख्या की गयी है।

तीसरा अध्याय है, नागालैण्ड की समकालीन काव्य संवेदना और तेमसुला आओ। जिसमें आओ की समकालीन कवयित्री तेमसुला आओ की कविताओं की व्याख्या करते हुए समकालीन कवयित्रियों में उनकी अलग पहचान को दर्शाया गया है।

चतुर्थ अध्याय है– 'अनामिका और तेमसुला आओ की कविताओं का अंतर्वस्तु विश्लेषण।'

इसमें अनामिका ने अपनी कविताओं में स्त्री को किस रूप में चित्रित किया है और तेमसुला आओ ने अपनी कविताओं में किस रूप में चित्रित किया है, इसका वर्णन किया गया है। प्रकृति को दोनों कवियों ने किस प्रकार चित्रित किया है इसका वर्णन है। समाज में व्याप्त स्थिति को दोनों कवियों ने उजागर किया है। कवयित्रियों के देखने के नज़रिये से जीवन दर्शन का पता चलता है। कवियों की दृष्टि और भी बहुत सारे चीजों पर गयी है उसका वर्णन भी इस अध्याय में किया गया है।